भारत सरकार

संस्कृति मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 243

उत्तर देने की तारीख 02.02.2026

प्राचीन भाषाओं का संरक्षण

243. श्रीमती भारती पारधी :

श्री श्रीरंग आप्पा चंदू बारणे :

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे :

श्री रविन्द्र दत्ताराम वायकर :

श्री नरेश गणपत म्हस्के :

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) संस्थागत उत्तरदायित्वों के माध्यम से भारत की प्राचीन भाषाओं के संरक्षण हेतु कितनी निधि आवंटित और उपयोग की गई है तथा मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में सांस्कृतिक केंद्रों की स्थापना और संचालन के लिए प्रस्तावित समय-सीमा क्या है;

(ख) उन प्राचीन भाषाओं, ग्रंथों, पांडुलिपियों, शिलालेखों, मौखिक परंपराओं आदि का ब्यौरा क्या है जिनका इन भावी केंद्रों के तहत संरक्षण या अध्ययन किए जाने की संभावना है;

(ग) क्या संरक्षण प्रक्रिया में डिजिटलीकरण, अनुसंधान, अनुवाद या शिक्षण घटकों को शामिल किया जा रहा है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं,

(घ) इस प्रकार के केंद्र राष्ट्रीय नीतिगत ढांचे या योजनाओं के साथ किस प्रकार संरेखित हैं;

(ङ) क्या उत्कृष्टता के मौजूदा केंद्रों या विरासत भाषा कार्यक्रमों का लाभ उठाया जा रहा है या उन्हें एकीकृत किया जा रहा है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं; और

(च) क्या पर्याप्त संरक्षण, शैक्षणिक कार्य और सार्वजनिक सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए बुनियादी ढांचे, मानव संसाधन और अभिलेख संबंधी क्षमता का उपाय करने की योजना चलाई जा रही है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

उत्तर

संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री

(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क) से (घ): संस्कृति मंत्रालय अपने स्वायत्त निकायों जैसे साहित्य अकादमी और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के माध्यम से भारत की प्राचीन भाषाओं की सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देता है, उन पर शोध करता है और उन्हें परिरक्षित करता है और ज्ञान भारतम मिशन जैसे अपने प्रमुख कार्यक्रमों के माध्यम से भी यह प्राचीन भाषाओं सहित भारत की सांस्कृतिक विरासत का परिरक्षण करता है।

साहित्य अकादमी और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के क्षेत्रीय केंद्र पहले से ही महाराष्ट्र में चल रहे हैं। मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में अतिरिक्त सांस्कृतिक केंद्र खोलने की ऐसी कोई योजना नहीं है। दोनों निकाय क्षेत्र की समृद्ध संस्कृति का उत्सव मनाने के लिए भारत सरकार के अन्य संस्थानों और महाराष्ट्र सरकार व मध्य प्रदेश सरकार सहित राज्य सरकारों के साथ सहयोग करते हैं। पिछले 5 वर्षों में साहित्य अकादेमी और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र को जारी की गई निधियों का ब्यौरा **अनुलग्नक-I** पर संलग्न है।

भारत सरकार का ज्ञान भारतम मिशन एक दूरदर्शी राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में शुरू किया गया है, जो भारत की विशाल पांडुलिपि विरासत के परिरक्षण, डिजिटलीकरण और प्रसार के लिए समर्पित है।

ज्ञान भारतम मिशन के अंतर्गत केंद्र केवल प्राचीन भारतीय पांडुलिपियों के परिरक्षण और अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करते हैं, चाहे उनकी लिपि या भाषा कुछ भी हो। मौजूदा ढांचे के अंतर्गत नीचे दिए गए पांच मुख्य क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है:

i. सर्वेक्षण और सूचीकरण
ii. संरक्षण और क्षमता निर्माण
iii. प्रौद्योगिकी और डिजिटलीकरण
iv. भाषाविज्ञान और अनुवाद
v. अनुसंधान, प्रकाशन और आउटरीच

ज्ञान भारतम मिशन राष्ट्रीय नीति फ्रेमवर्क के अनुरूप गतिविधियों को संचालित करने के लिए इन केंद्रों के साथ मामला-दर-मामला के आधार पर समझौता ज्ञापन(एमओयू) पर हस्ताक्षर करता है।

(ड.): जी हां। ज्ञान भारतम मिशन के अंतर्गत, प्राचीन भाषाओं सहित भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार के लिए मौजूदा केंद्रों और भाषा कार्यक्रमों का लाभ उठाया जा रहा है। साहित्य अकादेमी और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र जैसे संस्थानों को 'ग्रामलोक' जैसी पहलों और 'भाषा सम्मान' जैसे सम्मान के माध्यम से निरंतर जोड़ा जा रहा है। इसके

अलावा, प्राचीन भाषाओं के परिरक्षण और व्यापक प्रसार को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिवर्ष विशेष कार्यक्रम और पुरस्कार आयोजित किए जाते हैं।

(च): जी हां, अवसंरचना, मानव संसाधन और क्षमताओं की योजना बनाई गई है। इस संबंध में, संस्कृति मंत्रालय ने 11-13 सितंबर 2025 तक विज्ञान भवन, नई दिल्ली में "पांडुलिपि विरासत के माध्यम से भारत की ज्ञान विरासत को पुनः प्राप्त करना" विषय पर पहला ज्ञान भारतम अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया। सम्मेलन में देश-विदेश के विद्वानों, विशेषज्ञों, संस्थानों और सांस्कृतिक विशेषज्ञों सहित 1,000 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

चर्चा कई मुख्य विषयों- पांडुलिपियों के संरक्षण और जीर्णोद्धार, सर्वेक्षण और दस्तावेज़ीकरण मानक, डिजिटलीकरण उपकरण और मंच, एआई-आधारित नवाचार जैसे हस्तलिखित पाठ पहचान और लिपि का अर्थ निकालना, अनुवाद और प्रकाशन ढांचे, शिक्षा और संस्कृति के साथ समेकन, पांडुलिपि विज्ञान में क्षमता निर्माण, और कॉपीराइट एवं कानूनी मुद्दों पर केंद्रित थी।

***

अनुलग्नक–I

'प्राचीन भाषाओं का संरक्षण' के संबंध में दिनांक 2 फरवरी, 2026 को पूछे गए लोक सभा अतारांकित प्रश्न संख्या 243 के भाग (क) से (घ) के उत्तर में उल्लिखित अनुलग्नक

साहित्य अकादमी और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को जारी की गई निधियां

क्र.सं.	संगठन का नाम	जारी निधियां 2021-2022	जारी निधियां 2022-2023	जारी निधियां 2023-2024	जारी निधियां 2024-2025
1.	एसए	4368.85	4198.16	4356.59	4689.00
2.	आईजीएनसीए	5330.00	22977.82	10910.00	7410.00

*****